श्री बृहस्पतिवार की आरती

जय वृहस्पति देवा ऊँ जय वृहस्पति देवा |
छिन छिन भोग लगाऊँ कदली फल मेवा || १ ||
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी |
जगतपिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी || २ ||

चरणामृत निज निर्मल सब पातक हर्ता |
सकल मनोरथ दायक कृपा करो भर्ता || ३ ||
तन मन धन अर्पण कर जो जन शरण पड़े |
प्रभु प्रकट तब होकर आकर द्घार खड़े || ४ ||

दीनदयाल दयानिधि भक्तन हितकारी |
पाप दोष सब हर्ता भव बंधन हारी || ५ ||
सकल मनोरथ दायक सब संशय हारो |
विषय विकार मिटाओ संतन सुखकारी || ६ ||

जो कोई आरती तेरी प्रेम सहित गावे |
जेठानन्द आनन्दकर सो निश्चय पावे || ७ ||
सब बोलो विष्णु भगवान की जय |
बोलो वृहस्पतिदेव भगवान की जय || ८ ||

www.viswakalyanam.org

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133